उपसंहार

हिन्दी के जाने-माने कहानीकार जयशंकर प्रसाद जी की समस्त कहानियाँ कुल पाँच कहानीसंग्रहों में विभाजित हैं। वे कहानीसंग्रह हैं - `छाया,`` प्रतिध्वनि,`` आकाशदीप,` ` आँधी ` और ` इंद्रजाल `। इन सब कहानीसंग्रहों में कुल मिलाकर ६९ कहानियाँ संकलित हैं। परंतु यहाँ यह आवश्यक है कि, इन कहानियों के स्वरूप तथा उनमें प्राप्त प्रेम-तत्व को परखा जाय।

कहानीकार उच्च मानवीय मूल्यों का विचारक-प्रचारक तथा प्रवाहक होता है। अपने इस कार्य के लिए वह साहित्य को एक माध्यम के रूप में स्वीकृत करता है और मनुष्य और उसके जीवन के विविध पहलूओं को साकार करना कहानीकार का मकसद होता है। अत: शायद इसीलिए प्रसाद जी की भी कहानियों में आपके कवि और द्रष्टा होने की झाँकी मिलती है। आप काव्य विधा में एक युगप्रवर्तक की हैसियत से प्रस्तुत हुए और इस नाते कविता के माध्यम से पाठक को मोहित किया। आपकी इस जबरदस्त ताकत के दर्शन आपकी कहानियों में भी जगह-जगह होते हैं। खासकर आपका ` आकाशदीप ` कहानी संग्रह इस किस्म का है। उसे पढ़ने के उपरांत कहानीकार के सामर्थ्य का पता चल जाता है। आपके इस समर्थ सामर्थ्य की बुनियाद है - ऐतिहासिकता, आदर्शवादिता तथा यथार्थता। ` आकाशदीप ` कहानीसंग्रह की कहानियों से आपकी इस क्षेत्र की कामयाबी का रहस्य स्पष्ट होता है। इस कहानी-संग्रह की करिबन सभी कहानियाँ मानवी जीवन में सर्वव्याप्त तत्व-प्रेम-को अनेकविध रूपों से साकार करती हैं।

अन्य विधाओं की तरह कहानी के क्षेत्र में भी प्रसाद जी ने आरंभ से ही अपना पथ खुद बनाया, इस क्षेत्र में निरंतर नये-नये अनुसंधान किये। इन बातों का नतीजा यह निकला कि, एक-एक ऐसी बेमिसाल कहानियाँ बन पड़ी

कि, हिंदी कहानी क्षेत्र की बहुत बड़ी कमी की पूर्ति हो गयी । `छाया` आपका पहला कहानीसंग्रह है । इस संग्रह में प्रयासपूर्वक दार्शनिकता को पाया जा सकता है । किंतु अपने मूल संवेदनों में इन कहानियों में सरलता और सुगमता का जो उदय हुआ है वह प्रसाद जी के जीवन में हमेशा विकासमान होता रहा । इसप्रकार `छाया` कहानीसंग्रह की `गुलाम` और `प्रतिध्वनि` कहानीसंग्रह को `सहयोग` कहानियों में क्रमश: यौन विकृति और यौन कुंठा का गंभीर मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है । इसी `छाया` कहानीसंग्रह की `मदन-मृणालिनी,` `रसिया-बालम,` `अशोक` आदि कहानियों में प्रसाद जी ने प्रेम के त्याग-समर्पण आदि प्रेम के रूपों को चित्रित किया है । परंतु इन कहानियों को दुबारा पढने पर यह परिलक्षित होता है कि, इन कहानियों में चित्रित प्रेम, आदर्शवाद की ओट में छिपा है । परंतु यथार्थ में आदर्शवाद और वास्तविकता में काफी फासला होता है । `चंदा` कहानी में भी प्रेम के लिए आत्मसमर्पण दिखाया गया है । इसप्रकार केवल एक-दो कहानियों के बारे में नहीं तो इस कहानीसंग्रह की समस्त कहानियों के बारे में सोचना उचित रहेगा । इस दृष्टि से इन कहानियों को देखने पर यह साबित हो जाता है कि, भावुकता इन कहानियों का मूल आधार है और आदर्शवादिता इनकी नियति, जो प्रसाद जी के कहानी विकास में समय-समय पर विकसित होती दृष्टिगोचर होती है ।

प्रसाद जी का दूसरा कहानीसंग्रह है - `प्रतिध्वनि` । इसमें संकलित `गुण्ड साईं` और `अघोरी का मोह` इन कहानियों के जरिए प्रसाद जी ने `बाल-प्रेम` को प्रस्तुत किया है । `सहयोग` कहानी में आपने `कुंठित प्रेम` को स्पष्ट करने की कोशिश की है । इस रूप के प्रस्तुतीकरण में तो प्रसाद जी का मुकाबला कोई भी नहीं कर सकता । अत्यंत गंभीरता के साथ आपने कुंठित प्रेम को अपनी कहानियों में प्रदर्शित किया है और इसका

प्रस्तुतिकरण भी सहजता के साथ हुआ है, जो पाठक के मन को छू जाता है । वैसे संवेदनशीलता प्रसाद जी की कहानियों की खास खासियत है । आप राजा, रंक, वेश्या, भिखारिणी प्रत्येक का चित्रण संपूर्ण संवेदना के साथ करते हैं । आपकी यह संवेदनशीलता ` छाया ` और ` प्रतिध्वनि ` कहानीसंग्रहों तक बरकरार थी । इनमें आप खुद सदुपदेश करते नज़र आते हैं परंतु आगे की कहानियों में आपने यह सब पाठक पर छोड़ दिया और खुद तटस्थ बन गए ।

प्रसाद जी प्रथमतः कवि है और छायावाद के पक्षधर भी । आपकी इस छायावादी कहानीकला का चरम उत्कर्ष आपके ` आकाशदीप ` कहानी-संग्रह में हुआ है । इसकी हर कहानी अपने आप में एक अनोखापन लेकर प्रस्तुत होती है । ` आकाशदीप ` और ` ममता ` जैसी कहानियाँ केवल हिंदी साहित्य में ही नहीं पूरे विश्व साहित्य की कहानियोंमें अपना विशेष स्थान रखती हैं । ` आकाशदीप ` हर दृष्टि से परिपूर्ण कहानीसंग्रह है । प्रेम जैसे महान तत्व को त्याग और बलिदान के फूलों से सजाकर इस कहानियों को दिव्य और महान बनाया गया है । इन कहानियों में लौकिक दृष्टि से प्रेम की असफलता दिखायी देती है पर समाजसेवा में उतरकर अंत में दूसरे रास्ते और दूसरे अर्थ से यह प्रेम सफलता हासिल करके ही रहता है । आखिर हर चीज की सफलता के संबंध में हरेक के ख्यालात अलग-अलग हो सकते हैं । ` हिमालय का पथिक ` में प्रेम को मांगल्य और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बहाली गयी है । ` कला ` और ` देवदासी ` जैसी कहानियो का जिक्र किए बिना तो कहानी का इतिहास भी अधूरा रह जाएगा । ` चूड़ीवाली ` कहानी के माध्यम से प्रसाद जी ने मानवता के प्रति मानो अपना फर्ज़ ही अदा किया है । वेश्या भी इंसान है, उसका भी दिल होता है जिसमें प्रेम का वास हो सकता है । वेश्या अपने शरीर को न सही पर मन को और प्रेम को तो एकनिष्ठ जरूर रख सकती है ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

इस संग्रह की ` देवदासी ` कहानी में एक पक्षीय और शारीरिक प्रेम के रूप को निरूपित किया गया है। इसमें यह साबित कर दिखाया है कि, प्रेम ही मानव की सर्वश्रेष्ठ भावना है उसके अभाव में हर कीमती चीज़ भी कोई मूल्य नहीं रखती। तो दूसरी ओर यह बताया गया है कि, वासना मनुष्य को पशु बना देती है। इसप्रकार ` आकाशदीप ` कहानीसंग्रह में सफल-असफल प्रेम, त्याग-बलिदानमूलक प्रेम, रोमांटिक प्रेम, एकपक्षीय प्रेम, वेश्या का प्रेम, शारीरिक प्रेम आदि प्रेम के अनेक रूपी फूलों से प्रसाद जी ने हिंदी कहानी विधा की फुलवारी सँवारी है।

` आँधी ` कहानी संग्रह तक आते-आते प्रसाद जी परोक्ष-अपरोक्ष रूप में विधा सम्राट प्रेमचंद जी से आकर्षित होते नज़र आते हैं। यहाँ आपकी कहानियों को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का नया मोड़ प्राप्त होता है। आप एक सजग कलाकार के समान इतिहासक्रम के साथ चलने लगते हैं। अत: ` आँधी ` पचास प्रतिशत छायावादी और पचास प्रतिशत यथार्थवादी कहानीसंग्रह है। इस बात का एहसास इस संग्रह में संकलित ` मधुआ ` तथा ` पुरस्कार ` जैसी उत्कृष्ट कहानियों को पढ़कर होता है। ` आँधी ` कहानी में वैवाहिक बंधन की ओट से प्रेम की असफलता को स्पष्ट किया है। यह असफलता निराशा से पूरी तरह भरी हुयी है। जिसमें सुख-चैन तो क्या पूरे जीवन का ही त्याग किया गया है। ` दासी ` तथा ` पुरस्कार ` को ` राष्ट्रप्रेम ` के रंग में रंगारंग कर दिया है। ` पुरस्कार ` में राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ वैयक्तिक प्रेम को भी अमर बना दिया गया है। इन दोनों प्रेम को वफादारी से निभाने के लिए अंत में मौत का सहारा लिया गया है।

काल्पनिकता और भावुकता प्रसाद जी की कहानियों की दो आँखें हैं। आपकी अधिकांश कहानियाँ प्रेमपरक हैं। और इसमें भी अधिकता है ` एकपक्षीय निराश प्रेम ` की (आँधी)। परंतु प्रेम अंत में प्रेम ही होता है। इसी बात का निर्वाह करना प्रसाद जी की कहानियों का उद्देश्य था। अत:

असफलता, त्याग, समर्पण, जुदाई यह प्रेम की नियति है इस बात को स्पष्ट करने की भरसक कोशिश प्रसाद जी ने प्रेम-परक कहानियों में की है। पाने के बजाय कुछ देने में प्रेम का सच्चा आनंद निहित है इस तत्व पर आपकी कहानियों में बल दिया गया है। यही है प्रसाद जी की आदर्शवादिता। यही है भारतीय प्रेम का सच्चा रूप। यही है भारतीय संस्कृति की भव्यता, महानता।।

` इंद्रजाल ` प्रसाद जी का अंतिम कहानीसंग्रह है। यहाँ आकर प्रसाद जी की छायावादी प्रवृत्ति पर यथार्थवाद हावी होता परिलक्षित होता है। इसप्रकार प्रसाद जी का यथार्थवाद, स्वच्छंदतावादी यथार्थवाद है, वह ठेठ रूढिबध्द यथार्थवाद नहीं है। यह प्रसाद जी की कहानियों को सर्वमान्य और जीवंत साबित करने के लिए कारण भी बन जाता है। ` इंद्रजाल,` कहानीसंग्रह में ` छोटा जादूगर,`` सालवती,`` नूरी,`` गुंडा ` कहानियाँ के माध्यम से राष्ट्रप्रेम को निरूपित किया गया है। ` सलीम ` कहानी मानवप्रेम को स्पष्ट करती है। आदि स्त्री-पुरुष का प्रेम प्रस्तुत करती है आपकी ` चित्रमंदिर ` कहानी। तो इन्सानियत की नजर से वेश्याओं को देखा गया है ` सालवती ` में। ` इंद्रजाल ` कहानी सफल प्रेम की ओर निर्देश करती है। तो ` चित्रवाले पत्थर ` कहानी में अलौकिक प्रेम को व्यंजित किया गया है।

इसप्रकार जयशंकर प्रसाद जी की कहानियों का आयाम अत्यंत व्यापक और विशाल है। हाँ, आपकी कहानियों की कथावस्तु पर विस्तार की अल्पता का आरोप जरूर लगाया जा सकता है। परंतु यह बात भी द्रष्टव्य है कि हर कहानी अपने आपमें हर दृष्टि से परिपूर्ण है, अधूरेपन की तो कहीं पर गुंजाईश भी नहीं है। इन कहानियों में कहीं-कहीं पर ऐसा भी नजर आता है कि, आप भावुकता से किंचित हटकर कथावस्तु पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। पर ऐसे स्थलों

पर प्रसाद जी को नाकामयाबी ही नसिब हुयी है। क्यों कि, आप एक कलाकार हैं, कथावाचक नहीं। इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि, प्रसाद जी प्रेमचंद जी के नहीं रवीन्द्र जी के समीप है। आपकी कहानियों में भाव की गहराई लाजवाब है।

जयशंकर प्रसाद जी की समस्त कहानियों को यदि एक ही कोटि में रखना है, तो वह है - प्रेम-रोमांस। रोमांस की अंत:सलिल धारा आपकी प्रत्येक कहानी में बहती दृष्टिगोचर होती है। हर कहानी प्रेम के किसी-न-किसी पक्ष को जरूर उजागर करती है। प्रेम प्राकृतिक - पृष्ठभूमि पर अधिक निखरता नजर आता है। जिसमें प्रेम के अनेक रंग, अनेक प्रकार की झलक खिलती हुयी दिखायी देती है। प्रसाद जी की कहानियों में भावुकता एवं रहस्यात्मकता के साथ-साथ प्रेम की अभिव्यंजना स्पष्ट होती है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि, प्रसाद जी कहानियों से प्रेम के विविध रूप नहीं बरसते, बल्कि इन रूपों को अभिव्यंजित करने के लिए ये कहानियाँ प्रसाद जी की लेखनी से उतर रही हैं।

असफलता और पीड़ा आपकी कहानियों के प्रेम का प्रमुख स्वर है। यह पीड़ा इतनी प्रबल और गहरी है कि, आपकी कहानीयों की नायिकाएँ चंपा, किन्नरी, नूरी तथा पन्ना में वह प्रत्यक्ष साकार हो उठती है। प्रसाद जी की समस्त प्रेम-कहानियों में उच्छृंखला या उन्माद का कहीं नामोनिशान भी नहीं। इन कहानियों में प्रेम के साथ-साथ आपने जीवन के हल को ढूँढने की कोशिश की है। आदर्श, दया, क्षमा, संयम, त्याग जैसे महान गुणों से प्रसाद जी के पात्र प्रभावित हैं। अत: उनके प्रेम में विकार, वासना या अमानुषता का साया तक नजर नहीं आता।

प्रसाद जी की प्रेम-कहानियाँ, प्रेमाख्यान काव्यों तथा रीति काव्यों की परंपरा का गद्य रूप जान पडती हैं। प्रेम के उपर्युक्त रूपों के साथ-साथ `पितृ-प्रेम` (जहाँआरा),` निम्न कोटि के प्रेम का रूप समुपस्थित करनेवाली `

(सिकंदर की शपथ, अशोक), ` दांपत्य प्रेम ` (सहयोग, कलावती की शिक्षा, परिवर्तन), `प्रथम दृष्टि प्रेम ` (पुरस्कार, भिखारिन, रसिया बालम), ` बाह्य स्वरूप प्रेम ` (रूप की छाया, इंद्रजाल), ` विवाह पूर्व प्रेम ` (बिसाती, मदन-मृणालिनी), ` धर्म विनायक प्रेम ` (ममता), आदि प्रेम के रूप परिलक्षित होते हैं।

इसप्रकार प्रसाद जी की कहानियों में भाव तथा कल्पना की प्रधानता होने के कारण इनका सीधा संबंध लेखक के हृदय से है, मस्तिष्क से नहीं। वैसे भावों के संचरण में प्रसाद जी सच्चे भाव-योगी हैं। मनोभावों के आंदोलन से हृदय को झकझोर देने में आप माहिर हैं। आपने अपनी कहानियों में राष्ट्र-प्रेम, मानव-प्रेम के साथ-साथ जनसत्तात्मक भावों की खूबसूरत स्थापना की है।

वस्तुत: प्रसाद जी की कहानियों की रचना होकर कई दशक गुजर चुके हैं। इनके बाद हिंदी कहानी का विकास अबाध गति से होता ही रहा। उसके कथ्य और शिल्प में अनेक परिवर्तन तथा अनेक मोड़ आयें। इन परिवर्तनों की तरह ` प्रेम ` के स्वरूप ने भी आज की कहानी में आधुनिकता की ओर करवट बदल ली है। प्रसाद की कहानियों में प्रयुक्त प्रेम का स्वरूप और आधुनिक कहानियों में पाया जाने वाला प्रेम का स्वरूप इसमें काफ़ी दरार महसूस होती है। आज प्रेम में सेक्स और शारीरिकता की मात्रा अधिक हो गयी है। ऐसा होने के बावजूद प्रसाद जी की कहानियों को जब कोई पाठक आज पढ़ता है तो इनमें निहित प्रेम के महान और आदर्श स्वरूप की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता। शारीरिक प्रेम शरीर की आग बुझा सकता है तो मानसिक और आत्मिक प्रेम सात्त्विक और हार्दिक आनंद का सृजन करता है, यही आनंद प्रसाद जी की प्रेम-कहानियाँ पढ़ने के बाद हासिल होता है। प्रेम की मुग्धता और संयम को देखकर वह झूम-झूम उठता है।

इतना सब कुछ होने पर भी इन कहानियों पर यह आरोप हमेशा लगा रहता है कि, समाज का दुर्बल, शोषित मजदूर, जमीदार तथा साहुकार के अत्याचारों का शिकार हुआ गरीब किसान प्रसाद जी की कहानियों का विषय कभी भी न बना। आप हमेशा अपनी कल्पना और भावना के संसार में ही घिरे रहे अत: समाज की परेशानियों से आप हमेशा अनजान रहें। परंतु यदि एक अलग नज़रिये से सोचा जाय तो यह भी नामुमकिन नहीं है कि, आपने बीमार और अनपढ़ तथा अपनी ताकत को खोये हुए समाज में चुस्ती पैदा करने के लिए ही भारत की उज्वल परंपरा, इतिहास तथा महान संस्कृति को अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर करना चाहा।

इसप्रकार अपनी कहानियों के माध्यम से प्रसाद जी ने मानवी जीवन में भूत-वर्तमान और भविष्य में अबाधित रहनेवाला अनिवार्य तत्व-प्रेम-को सच्चे और गौरवपूर्ण स्वरूप में प्रस्तुत करने की भरसक कोशिश की है। आधुनिक युग में प्रेम के छिछले और सस्ते रूप को देखने के बाद प्रसाद जी का प्रेम-विषयक जो सत्यं, शिवं, सुंदरम् की पूर्तिवाला दृष्टिकोण है उसे पढ़कर मन को निश्छल आनंद की प्राप्ति होती है, जो आज अप्राप्य भी है। ऐसे आनंद का कोई मूल्य नहीं होता।

प्रसाद जी ने अपनी कहानियों को जिस सफलता के साथ प्रस्तुत किया है, उसके लिए भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग किया है जैसे - पत्रशैली, वर्णनात्मक शैली, कथोपकथन आदि। आपकी भाषा भी प्रवाहपूर्ण और समर्थ है। उसका अपना एक रस है। नयी-नयी भंगिमाएँ हैं। उसमें एक खास लचीलापन है, माधुर्य है। परंतु आपकी भाषा पर यह भी आरोप किया जा सकता है कि, कहानी विधा के लिए अनुकूलता से प्रसाद जी की भाषा कुछ अधिक ही कवित्वपूर्ण है। परंतु इससे कहानी की मनोहारिता में ज़रा भी आँच नहीं आयी है। इसप्रकार हिंदी-कहानी-जगत् में जयशंकर प्रसाद प्रेम के अद्वितीय कलाकार के रूप में मशहूर हैं।

<u>प्रसादजी की प्रेम कहानियों की विशेषताएँ</u> -

जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कहानियों में प्रेम के जिस स्वरूप को चित्रित किया है उसके पीछे आपका कोई निश्चित उद्देश्य जरूर था । ' प्रेम ' ऐसी चीज है जिसे पाकर और देकर दोनों अवस्थाओं में आनंद की प्राप्ति होती है । इस अनोखे दर्शन को समाज में प्रसारित कर उसमें प्रेम के सच्चे स्वरूप को प्रस्तुत करना यही प्रसाद जी की कहानियों प्रेम की स्थापना का उद्देश्य था । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने कल्पना और भावुकता का सहारा लिया है । जिससे आपको अपने मकसद को हासिल करने में आसानी रही है । आप अपनी कहानियों में प्रेम के भिन्न-भिन्न रूपों को प्रस्तुत कर अपने उद्देश्य में पूरी तरह से कामयाब हुए हैं ।

भारतीय इतिहास तथा संस्कृति उज्वल है । प्रसाद जी भारतीय गौरवपूर्ण इतिहास, के चहिते थे । अत: आपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अपनी कहानियों के लिए चुनकर उसमें से प्रेम-तत्व को अधिक स्पष्टता से मुखरित किया है । भारतीय उज्वल परंपरा आपके लेखन की प्रेरणा रही है । इसी परंपरा से भारतीय उज्वल प्रेम-परंपरा को भी स्वीकार कर अपनी कहानियों में प्रतिष्ठित किया । इतिहास बदल तो नहीं सकता पर उसकी पुनरावृत्ति जरूर हो सकती है । यही बात प्रसाद जी ने प्रेम पक्ष के विषय में इतिहास की गवाही में स्पष्ट करना अपना उद्देश्य माना और उसे बेहद कामयाबी के साथ पूरा किया ।

आदर्श मनुष्य का पथ-प्रदर्शक होता है । प्रसाद जी की कहानियों में आदर्श तो बुनियाद के रूप में प्रस्तुत होता है । प्रेम कोई निश्चित काम करने पर प्राप्त होनेवाली चीज नयी है, वह तो नसिब पर निर्भर है । किंतु

प्राप्त प्रेम में आदर्श का पथ निश्चित करना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण बात होती है। अत: प्रसाद जी ने अपने प्रेम-पात्रों के माध्यम से प्रेम के आदर्शात्मक स्वरूप को पेश किया है। पाठकों को प्रेम का सही मतलब समझाने की कोशिश की है।

प्रेम बाँटने से बढ़ता है। यह प्रसाद जी की धारणा थी। अत: आपने अपनी कहानियों में प्रेम का स्वच्छंद परंतु मर्यादायुक्त रूप पेश किया है। प्रेम यही एक जीवन की ऐसी सच्चाई है जिसके लिए लोग अपनी जिंदगी कुर्बान करते हैं। अपने प्रियतम या प्रियतमा की मौत के बाद उन्हें अपना जीवन बोझा महसूस होने लगता है। इसप्रकार यहाँ प्रसाद जी ने प्रेम की एकनिष्ठता की महानता को साकार किया है।

प्रेम पाना खुशनसिबी है। परंतु असफलता, निराशा, त्याग, समर्पण प्रेम की नियति है। प्रेम को जीवन का उद्देश्य मानकर उसके लिए अपना धन, माता-पिता, यहाँ तक कि अपना जीवन त्याग देनेवाले अनेक महान पात्र प्रसाद जी की कहानियों में जगह-जगह मिलते हैं। इनमें से अनेक पात्र प्रसाद जी ने भारतीय इतिहास से लिए है। तो इसप्रकार प्रेम सब कुछ त्यागने से श्रेष्ठ बनता है। नि:स्वार्थ प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है और निष्काम भावना से किया जाने वाला प्रेम ही आदर्श प्रेम है। इन बातों को प्रसाद जी ने अपनी कहानियों में निरूपित किया है।

प्रेम के अनेक रूप होते हैं। प्रसाद जी ने कुछ कहानियों से मानव - प्रेम को उभारने की चेष्टा की है। वैयक्तिक स्वार्थ के परे और भी कुछ होता है, जिसे प्राप्त कर सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है। यही इन कहानियों का मकसद है।

वैयक्तिक प्रेम श्रेष्ठ है, किंतु राष्ट्रप्रेम श्रेष्ठतम है। अतः प्रसाद जी ने अपनी कहानियों में कहीं-कहीं पर अपने वैयक्तिक प्रेम को नज़रअंदाज कर राष्ट्रप्रेम को पूरी वफ़ादारी के साथ निभानेवाले पात्रों का निर्माण किया है। वैसे प्रेम का कोई भी रूप श्रेष्ठ या कनिष्ठ नहीं होता। प्रेम अपने आपमें एक श्रेष्ठ तत्व है। परंतु जब वह मनुष्य के स्वार्थ का हिस्सा बन जाता है तो प्रेम की श्रेष्ठता घटती हुयी नज़र आती है।

प्रेम दो आत्माओं का मिलन होता है। वह शरीर सापेक्ष नहीं होता। प्रेम तो जन्म-जनम का बंधन होता है, अतः उसे पाकर अपने जीवन की सार्थकता को पाना एक समान है। प्रेम में कम और अधिक की गिनती भी नहीं होती। प्रेम, बस प्रेम होता है। प्रसाद जी ने प्रेम की इस अलौकिकता को अपनी श्रेष्ठ कहानियों में प्रस्तुत कर पाठक के मन में दिव्य आनंद की सृष्टि की है।

प्रेम-तत्व साहित्य में आरंभ से प्रमुख तत्व के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता हर माध्यम से उसने साहित्य में स्थान पाया है। उसके स्वरूप में निरंतर परिवर्तन आता गया। परंतु छायावादी कवि और कहानीकार प्रसाद ने साहित्य में प्रेम के अनेक रूपों को चित्रित करने की भरसक कोशीश की है। और इन प्रयत्नों के उपरांत प्रसाद जी को जो सफलता प्राप्त हुयी है वह अपने आपमें बेजोड़ है।

साहित्य समाज को बदलने का एक प्रभावी साधन है। प्रसाद जी ने इसे अबाधित रखते हुए अपने लक्ष्य को पूरा किया है। जब समाज में भाई-भाई एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं, मनुष्य-मनुष्य को चुसता है तब ऐसे निद्रिस्त समाज को जगाने के लिए, उनमें आपसी भाईचारा लाने के लिए प्रसाद जी ने अपनी लेखनी को प्रेम की स्याही में डूबाया, जिससे पाठक की सुप्त चेतना जाग उठी।

आपने प्रेम के स्वरूप में एक क्रांति की है। उसे राजा-रानी की प्रेमक्रिड़ाओं से मुक्त कर सामान्य इन्सान तक ला कर छोड़ दिया। प्रेम किसी विशिष्ट जाति-समाज का ठेका नहीं है। प्रेम लेना और देना मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसलिए प्रसाद जी ने आम इन्सान के जीवन में जिन अनेक रूपों से प्रेम प्रविष्ट होता है उनका बयान अपनी कहानियों में किया। जिसके कारण लोगों को ये कहानियाँ अपनी वैयक्तिक अनुभूती लगने लगीं। अपने जिंदगी के सुख-दु:ख का प्रतिबिंब लगने लगीं।

पहले भावपूर्ण, संवेदनशील हृदय के मालिक, उस पर अनोखी, जबरदस्त प्रतिभा और प्रेम जैसा विषय इन सब बातों का जब जयशंकर प्रसाद जी में सम्मेलन बन जाता है, तो प्रेम के मिलन और विरह के पहलों की धूप-छाँव में सुंदर-सुंदर प्रेम-कहानियाँ प्रस्तुत हो तो उसमें अचरज की कौनसी बात ? फिर भी प्रेम जैसा विषय होने के बावजूद प्रसाद जी ने जिस संयम और आदर्शवादिता से काम लिया है, वह बात निश्चित रूप से सराहनीय है। इसके कारण आपने जिस ऊँचाई को प्राप्त किया है वह आपको एक श्रेष्ठ स्थान पर बिठाकर ही रखती है।

<u>मूल्यांकन</u> :

साहित्य में प्रेम-तत्व का निर्वाह तो आरंभ से ही होता आया है। परंतु उसे बहुविध और आम जनता के जीवन में घोलकर उनके अनुभवों में पिरोकर प्रस्तुत करने का बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य प्रसाद जी ने किया है। वैसे प्रेम तत्व साहित्य की हर विधा-काव्य, उपन्यास, नाटक तथा कहानी में पायी जाती है। परंतु प्रसाद जी ने अपने साहित्य में उसे प्रमुख तत्व के रूप में स्वीकार किया है। यह आपकी खासियत है।

आज के साहित्य में प्रेम का जो स्वरूप प्राप्त होता है वह प्रसाद जी के प्रेम का परिवर्तित और परिष्कृत रूप है। आपके प्रेम का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। आपने प्रेम के अनेक रूप जैसे - सफल प्रेम, असफल प्रेम, स्वर्गीय प्रेम, त्याग समर्पण पूर्ण प्रेम, अलौकिक प्रेम, शारीरिक प्रेम वगैरा अपनी कहानियों में प्रस्तुत किये हैं। प्रेम का सिर्फ रोमानो स्वरूप स्पष्ट करना आपकी कहानियों का लक्ष्य कभी भी न था बल्कि आदर्श और त्याग से परिपूर्ण प्रेम मनुष्य के जीवन को भी परिपूर्ण तथा सफल, अमर बना देता है यह स्पष्ट करना आपकी प्रेम-कहानियों का उद्देश्य रहा है। वैसे प्रेम मनुष्य की मनुष्यता की निशानी है, इसे स्पष्ट करने के लिए प्रसाद जी ने प्रेम की विविध धारणाओं और रूपों का माध्यम चुना है।

प्रसाद जी ने हिंदी उपन्यास, नाटक, कविता तथा निबंध हर विधा में अपना मौलिक योगदान दिया है। और हर विधा में प्रेम-तत्व को निखारने की कोशिश की है। परंतु कहानी जैसे छोटे से कलेवर में भी आपने एक बहुत बड़ा उद्देश्य प्रस्तुत करने का जो कौशल दिखाया है वह निश्चित रूप से काबिल-ए-तारिफ़ है। जयशंकर प्रसाद जी का समग्र प्रेम-साहित्य हिंदी साहित्य की अनमोल निधी है।